ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(3): 464-468
www.allresearchjournal.com
Received: 05-01-2021
Accepted: 03-02-2021

अंजली कुमारी
शोध छात्र शिक्षाशास्त्र विभाग, मदरहुड विश्वविद्यालय, रूडकी, उत्तराखण्ड, भारत

डॉ. अनूप बलूनी
सह–आचार्य शिक्षाशास्त्र विभाग मदरहुड विश्वविद्यालय, रूडकी, उत्तराखण्ड, भारत

Corresponding Author:
अंजली कुमारी
शोध छात्र शिक्षाशास्त्र विभाग, मदरहुड विश्वविद्यालय, रूडकी, उत्तराखण्ड, भारत

इण्टरमीडिएट स्तर पर विद्यार्थियों की समाजमीतीय अवस्थिति का शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

अंजली कुमारी, डॉ. अनूप बलूनी

सारांश
प्रस्तुत शोध में इण्टरमीडिएट स्तर पर विद्यार्थियों की समाजमीतीय अवस्थिति का शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। समाजमिति एक समूह की बनावट का अध्ययन करने और प्रत्येक समूह के सदस्यों का सामाजिक स्तर मापने के प्रविधि है। व्यक्ति की समाजमीतीय अवस्थिति दोस्ती और रिश्तों दोनों में सामाजिक कामकाज के संदर्भ में उनके भविष्य को प्रभावित करसकती है। प्रस्तुत शोध में एक विद्यार्थी की अन्य विद्यार्थियों की राय में अंकित सामाजिक–स्थिति ही उस विद्यार्थी की सामाजिक अवस्थिति माना गया। समायोजन एक ऐसी अवस्था है जिसमें एक ओर व्यक्ति की आवश्यकताएँ और दूसरी ओर पर्यावरण के दावे पूरी तरह से संतुष्ट होते हैं या वह प्रक्रिया जिसके द्वारा यह सामंजस्यपूर्ण संबंध प्राप्त किया जासकता है। शैक्षिक उपलब्धि शैक्षिक विकासका मूल है। स्कूल में उच्च प्रदर्शन से बच्चा अपने आत्म सम्मान और आत्मविश्वास को बढ़ाता है। शैक्षिक क्षेत्रों में सफलता प्राप्तकर ने से बच्चे अपने लिए उच्च लक्ष्य निर्धारित करते हैं। विभिन्न परीक्षणों के आधारपर प्रांचल सांख्यिकीय तकनीकियों, समान्तर माध्य, मध्यांक, मानकविचलन तथा टी–मानका अनुप्रयोग करके निष्कर्ष तक पहुंचने का प्रयास किया गया इसके परिणामों एवं निष्कर्षों की व्याख्या आगे इस प्रकार है।

कूटशब्द : सामाजिक–स्थिति, शैक्षिक विकासका, मध्यांक, मानकविचलन

प्रस्तावना:
व्यक्ति अपने प्रतिदिन के जीवन में व्यक्तिगत अनुभव प्राप्त करता है यह अनुभव उसको प्रतिदिन जीवन में घटित होने वाली घटनाओं से ही प्राप्त होते हैं। इसी तरह विद्यार्थी जब स्कूल जाता है तो वहां पर मिलने वाले वातावरण व सहपाठियों के साथ अन्तः किया करके अलग–अलग अनुभव प्राप्त करता है।वह प्रेम तथा घृणा के भाव अपने साथ रहने वाले सहपाठियों से ही ग्रहण करता है। उसकी अन्तः क्रियाएं भी कभी विचित्र विषयों पर होती है तो कभी खेलकूद पर चर्चा होने लगती है। विद्यार्थी अपनी कक्षा के विद्यार्थियों के समूह में स्वंय को किस तरह स्थापित करता है यह उसके व्यवहार, व्यक्तित्व एवं वातावरण पर निर्भरकरता है। विद्यार्थी की स्वंय की मिलनसारिता, कार्य में सहयोग, कार्य संस्कृतिमें योगदान उसका जीवन अनुशासन, सहयोग, समाज में सक्रियता, सहानुभूति, परानुभूति जीवन की आकाक्षाएं उसको अपनी कक्षामें, समग्र विद्यालय में समायोजन करने व वांछित स्थान दिलाने में सहायक होती है। इनसब कियाओं के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण घटक है। विद्यार्थी आगे चलकर शिक्षित व्यक्ति बनता है एक शिक्षितव यक्ति ही समुदाय के साथ उचित सामाजिक व्यवहार करने में महत्वपूर्ण भुमिका निभा सकता है। मानवव्यवहार का अध्ययन शिक्षा–मनोविज्ञान में किया जाता है। उसकी शैक्षिक उपलब्धि उसे नित नये आयामों को प्राप्त करने में सहायक होती है। शिक्षा ही उसे अपने समुदाय व समाज में स्वंय को स्थापित करने के सन्दर्भमेंउसके द्वारा किये गये व्यवहार मुख्य भूमिका निभाते है। अन्यों के साथ सहयोग जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण इत्यादि मानव विकास के लिए समाजोपयोगी क्रियाएँ है। जो व्यक्ति को अपने समाज के मध्य स्थितिनिर्धारित करने में सहायता करती है। समाज में व्यक्ति की स्थिति आंकलन करने की प्रविधि समाजमितिक ही जाती है।

समाजमिति
समाजमिति एक समूह की बनावट का अध्ययन करने और प्रत्येक समूह के सदस्यों का सामाजिक स्तर मापने के प्रविधि है। इस विधि के जन्मदाता मोरेना`महोदय है। साधारण भाषा में समाजमिति मापन एक दिये हुए समूह में आकर्षण एवं दुराव की माप करने का साधन है। साधारणतया इसमें समूह का प्रत्येक सदस्य सम्मिलित किया जाता है जो कि निजी रूप से यह संकेत करता है कि

समूह के अन्य सदस्यों में से किनके साथ वह मिल–जुलकर किन्ही विशिष्ट क्रियाओं मे भाग लेता है एवं इसके अतिरिक्त वह यह भी संकेत करता है कि वह किन व्यक्तियों के साथ इस क्रियाओं मे भाग लेना पसन्द नही करता है। व्यक्ति की समूह / समाज में दूसरों की दृष्टिमें स्थिति को ही समाजमितीय अवस्थितिक ही जाती है। इस सन्दर्भ में व्यक्ति की मिलनसारिता, सांस्कृतिक कार्यक्रम में रूचि, कक्षा में सक्रियता, शैक्षिक अकांक्षा, कक्षाकार्य में निपुणता, अनुशासनप्रियता तथा सहानुभूति सक्रिय भूमिका निभाते है ।

कुल मिलाकर, व्यक्ति की समाजमीतीय अवस्थिति इस बात का संकेतक है कि उन्हें उनके साथियों द्वाराकैसे देखा जाता है। विभिन्न प्रकार के सहकर्मी संबंधों वाले बच्चों के व्यवहार और परिणामों को बेहतर ढंग से समझने के लिए शोधकर्ता समाजमीतीय अवस्थिति को मापते हैं। समाजमीतीय अवस्थिति को सहकर्मी स्थिति के रूप में भी जाना जाता है।

व्यक्ति की समाजमीतीय अवस्थिति दोस्ती और रिश्तों दोनों में सामाजिक कामकाज के संदर्भमें उनके भविष्य को प्रभावित कर सकती है। समाजमीतीय स्थिति का इस बात पर भी असर पड़ सकता है कि व्यक्ति खुद को कैसे देखते है।

सोशियोमेट्री शब्द लैटिन भाषा के सामाजिक या साथी माप से लिया गया है।समाजमिति परीक्षण स्वयं इस अर्थ में एक परीक्षा नहीं है कि आमतौर पर शब्द के रूप में प्रयोग किया जाता है बल्कि एक तकनीक है। यह मोरेनो द्वारा निदान के अन्य तरीके के साथ भ्रमित करने से रोकने के लिए तथा सामान्य रूप से समाजमिति का क्षेत्र विकसित करने के लिए नामित किया गया था। सोशियोमेट्रिक तकनीक के साथ भीतर सामाजिक व्यवस्थाएं जैसे कि विभिन्न जातियों के बीच या ग्रामीण और शहरी लोगों को मापा जा सकता है और विशेष प्रक्रियाएं जैसे भूमिका निभाना, सामाजिक नाटक और समूह के अन्य रूपगति शीलता का उपयोग एकीकरण को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

समायोजन

जैविक दृष्टिकोण से समायोजन जीवित रहने का एक तरीका है। यह जीने की एक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपनी आवश्यकताओ को पूरा करने का प्रयास करता है और उन्हें शोधित भी करता है। इस तरह के समायोजन का मान दंड जीवन की अच्छी अवधि और अच्छा स्वास्थ्य है। इस दृष्टिकोण से समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति मनोवैज्ञानिक संतुलन के स्तर को बनाए रखने का प्रयास करता है। इस प्रकार एक तनाव कम करने की प्रक्रिया बन जातीहै।समायोजनप्रक्रियामें एक महसूस की गईआवश्यकता शामिल होती है, इसके विफल होने की ओर अग्रसर होती है और इसके परिणाम स्वरूप विभिन्न प्रतिक्रियाएं होती हैं जिससे लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है यानी–संतुष्टि।

समायोजन की प्रक्रिया की कुछ विशेषताएं निम्न से ली गई हैं। समायोजन की पिछली परिभाषा और इस प्रकार सचित्र हैः –

- स्वयं और पर्यावरण दोनों उत्तरदायी या परिवर्तनशील हैं।
- समायोजन हमें परिस्थितियों के अनुसार अपने जीवन के तरीके को बदलने के लिए प्रेरित करताहै।
- समायोजन हमें पर्यावरण की स्थितियों में वांछनीय परिवर्तन लाने की शक्तिऔर क्षमता देता है।
- समायोजन हमें अपनी आवश्यकता और के बीच संतुलन बनाए रखने में मदद करता है।
- समायोजन व्यवहार सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों से निर्धारित होता है।
- समायोजन पैटर्न (प्रतिक्रिया) व्यक्तियों के लिए उनके व्यक्तित्व के आधार पर अद्वितीय है।
- समायोजन ऐसी प्रक्रिया है जो हमें एक सुखी और संघर्षपूर्ण जीवन जीने की ओर ले जाती है।

समायोजन के क्षेत्र

जीवन समायोजन की एक सतत प्रक्रियाहै। जीवन में हरदिन हम अनगिनत समायोजन करते हैं । उनमें से अधिकांश स्पष्ट रूप से महत्वपूर्ण हैं और उनमें से कई बिना किसी विशेष विचार के और अक्सर जागरूकता के साथ कमोबेश स्वचालित रूप से किए जाते हैं । किशोर, हालांकि युवा ऊर्जावान, सामाजिक, व्यावसायिक, स्कूल, स्वास्थ्य, घर आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन की समस्याओं का सामना करते हैं। समायोजन की उनकी समस्याओं का आकलन करने के लिए विभिन्न परीक्षण विकसित किए गए हैं। इस अध्ययन के अंतर्गत आनेवाले कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं– सामाजिक, भावनात्मक और शैक्षिक। भारतीय परिस्थितियों में, इन्हे सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यक माना जाता है क्योंकि इनमें स्कूलों और कॉलेजों में भाग लेने वाले किशोरों की अधिकांश समायोजन समस्याएं शामिल हैं। ये पहलू अतिव्यापी हैं और स्वतंत्र नहीं हैं। भावनात्मक रूप से परिपक्व व्यक्ति में सहिष्णुता, दान और दूसरों के विचार जैसे सामाजिक गुण होने की अधिक संभावना होती है। तो, छात्र का सामान्य समायोजन भावनात्मक, सामाजिक और शैक्षिक पहलू से मिलकर एक समग्र और वैश्विक अवधारणा है।

शैक्षणिकउपलब्धि

शिक्षा एक उद्देश्य पूर्ण प्रक्रिया है जो बच्चों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक और बौद्धिक विकास सहित समग्र विकास पर जोर देती है। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए हमारा समाज विषय के अनुसार कुछ शैक्षिक उद्देश्य निर्धारित करता है और स्कूल में शिक्षा की एक व्यवस्थित प्रक्रिया का नेतृत्व करता है। विद्यालय के सुव्यवस्थित वातावरण में, शिक्षक पढ़ाया जाता है और उद्देश्यों के माध्यम से कुछ निर्दिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पाठ्यक्रम के साथ अंतः क्रिया करता है, जो निश्चित रूप से शिक्षण सीखने की प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप छात्र व्यवहार में कुछ बौद्धिक लाभ प्राप्त करता है। उपलब्धि शब्द किसी दिए गए कौशल या ज्ञान के शरीर में प्रदर्शन की दक्षता की उपलब्धि है। शैक्षिक उपलब्धि शैक्षिक विकास का मूल है। स्कूल में उच्च प्रदर्शन से बच्चा अपने आत्मसम्मान और आत्मविश्वास को बढ़ाता है। शैक्षिक क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने से बच्चे अपने लिए उच्च लक्ष्य निर्धारित करते हैं।

शोध की आवश्यकता

विद्यालय मेप्रवेश लेने के बाद विद्यार्थी अपनी कक्षा में जब अन्य सहपाठियों से मिलता है तो उनके साथ परिचय होता है। परिचय के माध्यम से विद्यार्थी अन्य विद्यार्थियों के परिवार और उनकी संस्कृतियों की सामान्य जानकारी पाते हैं। पारिवारिक संस्कृति में समरूपता वंश कई विद्यार्थियों से मित्रता हो जाती है। धीरे–धीरे वे एक–दूसरे की आदतों, रूचियों, शैक्षिक स्तरों एंव अन्य कार्य–कलापों की जानकारी प्राप्त करते है और समानता के आधार पर एक–दूसरे से जुडते जाते हैं। पारस्परिक सक्रियता एवं सहयोग से कला मे कतिपय विद्यार्थी अन्य विद्यार्थियों के मध्य लोकप्रिय बन जाते है परन्तु कतिपय अलग–थलग पड जाते है। धीरे–धीरे विद्यार्थियों के उपसमुह बन जाते है। कई विद्यार्थी अपने सहपाठियों की अच्छाइयों को नही देख पाते और एक–दूसरे को जाने बिना ही अपनी एक धारणा उनके प्रति बना लेते है। उसी धारणा के चलते ही वह कुछ अच्छे मित्रो का साथ खो देते है। कभी–कभी देखा गया है कि छात्र दूसरे छात्र को केवल इसलिए पसन्द नही करते क्योंकि वह कक्षा में उनसे अधिक अच्छा प्रदर्शन करता है और उसके मन में उस छात्र जिसने कक्षा में अच्छा प्रदर्शन किया या प्रथम स्थान प्राप्त किया ईर्ष्या आ जाती है। इन समस्याओं को जानने और इस तरह की समस्याए जन्म क्यूं लेती है इस का कारण खोजने के लिए हमें विद्यार्थी व शिक्षक के मनोभावों को जानना जरूरी होता है। शोधार्थी स्वंय शिक्षिका है

और अपनी कक्षा के विद्यार्थियों मे ऐसी विकट परिस्थितियों को पाती रही है विद्यार्थियों को दूसरे की पसन्द बनने की ठहा–पोत की मनःस्थिति को भापती रही है। पसन्द विद्यार्थी आगे चलकर एक समाजोपयोगी मनुष्य बन जाते है जबकि नापसन्द विद्यार्थी आगे चल हतोत्साही व निराश मनुष्य बन जाते है। इसे अवलोकित कर शोधार्थी ने विचार किया कि कक्षा में सहपाठियों की दृष्टि में पसंद बनने के लिए प्रभावी कारकों की पहचान की जाये तथा उन्हे संवृद्वित कर विद्याथियों की नापसन्द को कम करने का प्रयास किया जा सके इसे ध्यान मे रखते हुए ही प्रस्तुत शोध कार्य को प्रस्तावित किया जा रहा है।

उद्देश्य

इण्टरमीडिएट कक्षा में हिन्दी माध्यम में अध्ययनरत विद्यार्थियों की–

- समाजमीति–अवस्थिति का पता लगाना।
- शैक्षिक उपलब्धि स्तरका अध्ययन करना।
- समायोजन स्तर का पता लगाना।
- शैक्षिकउपलब्धि के संदर्भ में समाजमिति–अवस्थिति का अध्ययन करना।
- समायोजन के संदर्भ में समाजमिति–अवस्थिति का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं

इण्टरमीडिएट कक्षा में हिन्दी माध्यम में अध्ययनरत विद्यार्थियों की–

- उच्च एंव निम्न शैक्षिकउपलब्धि के विद्यार्थियों की समाजमिति–अवस्थिति में सार्थक अन्तर नही है।
- उच्च एंव निम्न समायोजित विद्यार्थियों की समाजमिति–अवस्थितिमें सार्थक अन्तर नहीं है।
- शैक्षिकउपलब्धि एंव समाजमिति–अवस्थिति में कोई सार्थक सह संबंध नहीं है।
- समायोजन एंव समाजमिति–अवस्थिति में कोई सार्थक सह संबंध नही है।

शोध अध्ययन कासीमाकंन

प्रस्तुत शोध कार्य का सीमाकंन मुजफ्फरनगर जनपद के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में स्थित इण्टरमीडिएट कालेजों मे अध्ययनरत सत्र 2019–20 की छात्राओं तक सीमित है। मुजफ्फरनगर जनपद के शहरी ग्रामीण क्षेत्र मे स्थित हिन्दी माध्यम की छात्राओं तक सीमित है।

पूजूबिलकीस अब्दुल्ला (2017)माता–पिता के प्रोत्साहन के संबंध में किशोरों की शैक्षणिकउपलब्धि। नमूने में 200 माध्यमिक विद्यालय के छात्र (100 = लड़के और 100 = लड़कियां) शामिल थे, जहां यह पाया गया कि शैक्षणिकउपलब्धि और छात्रों के माता–पिता के प्रोत्साहन के बीच महत्वपूर्ण संबंध है, और यह दर्शाता है कि लड़कों और लड़कियों के माता–पिता के प्रोत्साहन में महत्व का अंतर है ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के किशोरों की शैक्षणिकउपलब्धि में। इससे पता चलाकि शहरी क्षेत्रों के लड़के ग्रामीण क्षेत्रों के लड़कों की तुलना में अच्छी शैक्षणिकउपलब्धि हासिल करते हैं, और यह दर्शाता है कि शहरी क्षेत्रों की लड़कियां भी ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में अच्छी शैक्षणिकउपलब्धि हासिल करती हैं। तथा बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिकउपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।

बछरसुब्रत (2017) ने उच्चमाध्यमिक स्तर के छात्रों के बीच शिक्षा विषय की अकादमिक उपलब्धि पर अध्ययन किया। एक नमूने में 30 ग्रामीण और 32 शहरी छात्र शामिल थे। महत्व के परीक्षण से पता चला किग्रामीण और शहरी उच्चमाध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के बीच अंतर मौजूद है, जहां शहरी क्षेत्रों की शैक्षणिकउपलब्धि के औसत अंक ग्रामीण क्षेत्रों के उच्चमाध्यमिक विद्यालयों की तुलना में काफी अधिक थे। और यह भी समग्र खोज से पता चलताहै कि शिक्षा विषय की शैक्षणिकउपलब्धि में ग्रामीण छात्रों और शहरी छात्रों, ग्रामीण पुरुष छात्रों और ग्रामीण महिला छात्रों, शहरी पुरुष छात्रों और ग्रामीण महिला छात्रों, शहरी महिला छात्रों और ग्रामीण पुरुष छात्रों के बीच महत्वपूर्ण अंतर मौजूद है।

सिंह चम्यल देवेंद्र एट अल (2017) माध्यमिक और वरिष्ठमाध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच समायोजन के एक तुलनात्मक अध्ययन पर अध्ययन किया। अध्ययन के लिए चुना गया नमूना माध्यमिक औरवरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के 220 छात्र थे, जिनमें से 120 लड़के और 100 लड़कियां थीं। परिणामों ने सरकारी और निजी स्कूलों और ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के माध्यमिक और वरिष्ठमाध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच समायोजन (भावनात्मक, सामाजिक और शैक्षिक) में महत्वपूर्ण अंतर प्रकट किया। महत्व स्तर 0.05 टी–मान इंगित करता है कि निजी स्कूल के छात्रों में सरकारी स्कूलों के छात्रों की तुलना में बेहतर समायोजन है। और ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महत्व स्तर 0.05 टी–मान से संकेत मिलता है कि शहरी छात्रों का ग्रामीण छात्रों की तुलना में बेहतर समायोजन है। और पाया कि लड़कों और लड़कियों के बीच समायोजन (भावनात्मक, सामाजिक और शैक्षिक) में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्यइण्टरमीडिएट कक्षाओं मे अध्ययनरत छात्राओं की अपनी कक्षाओं मे समाजमिति की वर्तमान स्थिति क्या है तथा उसके प्रभावी निर्धारक कौन–कौन से हो सकते हैं। इसका अध्ययन किया जाना प्रस्तावित है। इस हेतू वर्णनात्मक शोध विधि अपनाई जायेगी जिसे आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि कहते है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध कार्य में जनपद मुजफ्फर नगर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र मे स्थित हिन्दी माध्यम मे इण्टरमीडिएट कक्षा में अध्ययनरत संस्थागत छात्राओं को शोध कार्य की जनसँख्या के रूप में लिया गया।

शोध चर

- प्रस्तुत शोध कार्य के निम्नचरहैं
- **स्वतन्त्र चर–**प्रस्तुत शोध मेंसमाजमितीय अवस्थिति (निर्धारककारक : शैक्षिक आकांक्षा, मिलनसारिता, गृहकार्य मे सहायता, सांस्कृतिक कार्यक्रम मे रूचि, अनुशासित प्रियता, कक्षा में सकियता, कक्षाकार्य मे निपुणता, सहानुभूति) स्वतंत्र चर है।
- **आश्रितचर–**प्रस्तुत शोध में शैक्षिकउपलब्धि व समायोजन आश्रित चर है।
- **जनसांख्यिकीय चर–**प्रस्तुत शोध में स्थान, शिक्षा का प्रकारजन सांख्यिकीय चर है।

शोध उपकरण

- शोधार्थी द्वारानिर्मित समाजमिति परीक्षण
- शैक्षिकउपलब्धि –छात्राओं की कक्षा 10 के वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांक
- समायोजनस्तर–डॉ ए० के०पी० सिंहा एंव आर पी सिंह द्वारा निर्मित एडजेस्टमेन्ट इन्वेन्टरी फॉर स्कूल स्टूडेन्ट्स

सांख्यिकीय प्रविधि

प्रांचल सांख्यिकीय तकनीकियों, समान्तर माध्य, मध्यांक, मानकविचलन, टी–मान तथा सहसम्बन्ध गुणांक (आर–मान) का अनुप्रयोग किया।

उद्देश्य: शैक्षिकउपलब्धि के संदर्भ में समाजमिति–अवस्थितिका अध्ययन करना।

तलिका 1: शैक्षिकउपलब्धि के संदर्भ में समाजमिति–अवस्थिति का मध्यमान और प्रामाणिक विचलन

शैक्षिकउपलब्धि / समाजमीति			लोकप्रिय	औसत से ऊपर	औसत	औसत से नीचे	उपेक्षा
छात्रों की संख्या	छ		189	92	60	42	17
शैक्षिकउपलब्धि	औसत से ऊपर	मध्यमान	80.18	72.69	71.12	65.18	52.39
		प्रामाणिक विचलन	20.79	18.32	18.21	15.05	9.81
	औसत	मध्यमान	62.91	64.98	60.10	63.19	59.17
		प्रामाणि कविचलन	14.05	14.35	13.95	14.11	13.52
	औसत से नीचे	मध्यमान	50.40	59.61	61.21	57.29	54.28
		प्रामाणिक विचलन	8.89	13.93	13.99	12.93	10.97

शैक्षिकउपलब्धि के संदर्भ में समाजमिति–अवस्थिति का अध्ययन करने के पश्चात् यह पाया गया कि समाजमितीय अवस्थिति के अनुरूप छात्राओं के शैक्षिकउपलब्धि में अंतर है। यह तालिका दर्शाती है कि समाजमितीय अवस्थिति के विभाजन के आधार पर छात्राओं की उपलब्धि कैसी रही है। लोकप्रिय छात्राओं के अधिकतम अंक देखे है और काफी छात्राएं उच्चवर्ग में है। उसी प्रकार से उपेक्षित छात्राओं के अंक औसत से निचे पाए गए है। समाजमितीय अवस्थिति के आधारपर उनकी उब्लब्धियों में अंतर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

उद्देश्य: उच्च एंवनिम्न शैक्षिकउपलब्धि के विद्यार्थियों की समाजमिति–अवस्थितिका अध्ययन करना।

तलिका 2: उच्च एंव निम्न शैक्षिकउपलब्धि के विद्यार्थियों की समाजमिति–अवस्थितिका मध्यमान और प्रामाणिक विचलन

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिकविचलन	टीमान	सार्थकताकास्तर
उच्च	200	83.18	21.09	10.17	0.01
निम्न	200	64.83	14.33		0.05

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिकउपलब्धि और समाजमितीय अवस्थिति में अंतर पाया गया। समाजमितीय अवस्थिति का शैक्षिकउपलब्धियों पर स्पष्ट प्रभाव देखा गया। लोकप्रिय वर्गवाले विद्यार्थी की अंकगणना काफी अधिक देखी गयी। जबकि उपेक्षितवर्ग वाले विद्यार्थियों की अंकगणना औसत पायी गयी। निम्न शैक्षिकउपलब्धि वाले वर्ग में विद्यार्थियों की अंक गणना दर्शाती है कि समाजमितीय अवस्थिति के कारण उनके प्रदर्शनपर प्रभाव आया है। विद्यार्थियों के व्यवहार एवं व्यक्तित्व में परिवर्तन के कारण ऐसा देखा गया। कक्षा में मिलन सारिता की कमी, समय पर कार्य पूरा न कर पाने और अनुशासन हीनता की प्रभाव स्वरूप ऐसा पाया गया।

उद्देश्य: उच्च एंव निम्न समायोजित विद्यार्थियों की समाजमिति–अवस्थिति का अध्ययन करना।

तलिका 3: उच्च एंव निम्न समायोजित विद्यार्थियों की समाजमिति–अवस्थिति का मध्यमान और प्रामाणिक विचलन

स्मूह	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिकविचलन	टीमान	सार्थकताकास्तर
उच्च	200	12.32	4.97	12.64	0.01
निम्न	200	7.84	0.64		0.05

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर विद्यार्थियों के समायोजन और समाजमितीय अवस्थिति में अंतर पाया गया। लोकप्रिय वर्ग वाली छात्राओं में भावनात्मक, सामाजिक और शैक्षिक रूप से समायोजन अधिक देखा गया। समाजमितीय अवस्थिति अच्छी होने के कारण सभी आधारों पर अच्छीप्रकार से समायोजित देख`गए। औसत से ऊपर और औसत वर्ग वाले छात्र भावनात्मक और शैक्षिक रूप से कम समायोजित देखे गए। इसका अर्थ समाजमितीय अवस्थिति का प्रभाव समायोजन स्तर पर पड़ता है। उपेक्षित वर्ग भी सामाजिक और शैक्षिक रूप से न के बराबर ही समायोजित देखे गए। तो इसमें कोई संशय नहीं है कि समाजमितीय अवस्थिति विभाजन के अनुरूप विभिन्नस्तरों पर समायोजन अलग अलग पाया गया।

उद्देश्य: समायोजन एंव शैक्षिकउपलब्धि का अध्ययन करना।

तलिका 4: समायोजन एंव शैक्षिकउपलब्धि का मध्यमान और प्रामाणिक विचलन

स्मूह	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिकविचलन	टीमान
शैक्षिकउपलब्धि	400	79.93	20.88	0.117
समायोजन	400	13.47	5.17	

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर विद्यार्थियों के समायोजन एंव शैक्षिकउपलब्धि में अंतर पाया गया। छात्र जबपूर्ण रूप से समायोजन करने में सक्षम नहीं हो पाता तो इसका प्रभाव उसके शैक्षिक उपलब्धि पर भी देखा जासकता है। भावनात्मक रूप से कम समायोजित छात्राएं औसत शैक्षिकस्तर में देखे गए। जबकि औसत से ऊपरवाली छात्राएं सबसे अधिक तीनो वर्गों में समायोजित देखे गए। यह कहा जासकता है कि शैक्षिकउपलब्धि और समायोजन में सार्थक समबन्ध है क्योंकि एक के अभाव में दूसरे पर उसका प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा गया है।

शैक्षिक निहितार्थ और सुझाव

सामाजिक, शैक्षिक और भावनात्मक समायोजन को कैसे प्रबंधित किया जाए, इस पर विद्यालय विशेष वार्ता आयोजित करेगा। विद्यालय खेल आयोजनों, ललितकला आयोजनों के माध्यम से विद्यार्थियों के बीच सौहार्दपूर्ण वातावरण को बढ़ाएगा जो विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच अच्छी शैक्षिकउपलब्धि को बढ़ावा देता है। विद्यार्थी कुव्यवस्थाओं को दूर करने के लिए माता–पिता और छात्रों के साथ विशेष परामर्श सत्र की व्यवस्था करेगा। परिवार के सदस्यों के बीच स्वस्थ संबंध बनाने के लिए माता–पिताका घरमें सौहार्दपूर्ण वातावरण होना चाहिए ताकि समायोजन का प्रबंध घर से ही आरम्भ हो सकें और विद्यालय में शिक्षक उसे और निखारकर विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन करने का प्रयत्न करेगा।

प्रस्तुत अध्ययन से इस बात की पुष्टि होती है कि शैक्षिकउपलब्धि के संबंध में औसत से नीचे और उपेक्षित वर्ग के छात्रों के

भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षिक समायोजन और समायोजन के बीच कम सकारात्मक संबंध है। ये निष्कर्ष मान सिंह भाई और यशवंत भाई (2014), येलैया (2012) और कुमार और ढिल्लों (2010) के निष्कर्षों की पुष्टि करते हैं। लोक प्रिय वर्ग और औसत से ऊपरवाले छात्रों को अपने माता–पिता के साथ–साथ शिक्षकों से कुछ मनोवैज्ञानिक समर्थन की आवश्यकता होती है। इसलिए, माता–पिता और शिक्षकों को उन छात्रों को अधिक मार्ग दर्शन और सहायक देखभाल देनी चाहिए जो अपने विद्यालयों में पढ़ रहे हैं।

परिणामों से पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में माता–पिता के साथ से लड़कियों और शहरी वर्ग में जो छात्राएं छात्रावास में रहती है उनमे समायोजन और शैक्षिकउपलब्धि में भी अंतर देखा गया यह दर्शाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी भावनात्मक और पारिवारिक संबंध हैं। जो कि अन्य छात्राओं में भी सहानुभूति, समायोजन औरस्नेही रवैया पैदा करने में कारगर साबित हो सकता है परिवार के सदस्यों का यह कर्तव्य है कि जिस बच्चे ने एक या दोनों माता–पिताको खो दिया हो, उसी तरह उसकी देखभाल करें जैसे वे अपने बच्चों की देखभाल करते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि शहरी जीवन व्यस्त, जटिल और बहुत महंगा है लेकिन फिर भी वंचित आपके अपने हैं और उन माता–पिता के मामले में जो लंबे समय तक घर से दूर रहते हैं, उन्हें सलाह दी जानी चाहिए कि वे अपने बच्चों के संपर्क में रहें टेलीफोन, पत्र आदि के माध्यम से और जब भी वे घर आते हैं, तो उन्हें अपने बच्चों से बात करने, उनकी समस्या सुनने की कोशिश करनी चाहिए। और अन्य मामलों में सहानुभूति पूर्वक और अनावश्यक रूप से उनसे नाराज नहीं होना चाहिए।

निष्कर्ष

अन्वेषक ने इस दिशा में केवल एक नया संकेत दिया है। लेकिन अगर समाज, शिक्षक, प्रशिक्षु, संस्थान, प्रोफेसर, सरकार और शिक्षाविद इस संकेत की अनदेखी करने की गलती करेंगे तो प्रत्येक को सबसे खराब परिणाम भुगतने होंगे। अतः एक सामान्य अन्वेषक के रूपमें मेरा यह सुझाव है कि वर्तमान अध्ययन को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए और इसके निष्कर्षों और सुझावों को तुरंत लागू किया जाना चाहिए। अंतमें, एक नए अन्वेषक के रूपमें यहां किसी भी दोष की संभावना है जिसे क्षमा योग्य माना जाना चाहिए।

सन्दर्भ

1. गुप्ता के (2008) मातापिता की शैक्षणिक योग्यताओं का बच्चों की मातापिता की शैक्षणिक योग्यताओं का बच्चों की शैक्षिकउपलब्धि पर प्रभाव।"
2. गुप्ता, डा. एस. पी. आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदापुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1998
3. चमायल, डी.एस. और, मनरल, बी (2017), ''अल्मोड़ाजिले के माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच समायोजन का एक तुलनात्मक अध्ययन'', द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, वॉल्यूम। 4, अंक 2, संख्या 85, पीपी 61–69।
4. जैन, पी. औरजंदू, के. (1998) –किशोर लड़कियों और लड़कों के स्कूल समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।जे एडु। रेस. विस्तार 35(2):पीपी– 14–21।
5. डॉ मनीषा जोशी और डॉ सुरेश जोशी (2010) – ''उच्च और निम्न शैक्षणिकउपलब्धि वाले चिंतित किशोरों की रचनात्मकता और भावनात्मकबुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन।'' संचायका (हिन्दी संस्करण) पृ. 9–12.
6. डेविस 1957 साथियों के बीच समाजशास्त्रीय स्थिति के सह सम्बंधो की जांच का अध्ययन
7. पटेल, डी.एम. औरदीक्षित, एसपी (2013) –अहमदाबाद शहर के बी.एड कॉलेजों में छात्राओं की समायोजन समस्याओं पर एक अध्ययन। इंटरनेशनल मल्टीडिसिप्लिनरीई–जर्नल आईएसएसएन 2277 – 4262 अंक– जनवरी–2013।
8. बेनीपाल, अमृतपाल सिंह और सिंह जसपाल (2014)–किशोरों की शैक्षणिकउपलब्धि पंजाब में कक्षा पर्यावरण की उनकी धारणा के संबंध, शिक्षा कॉन्फैब, वॉल्यूम। 3, नंबर 7
9. मकवाना, एम. (2013) –अहमदाबाद जिले में शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के बीच माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का समायोजन। जर्नल ऑफ कंटेम्परेरी साइकोलॉजिकल रिसर्च, वॉल्यूम. 1, अंक 1.
10. मोहनऔरमोहन 1970 ने सोशियोमेट्रिक पसंद पर परीक्षा परिणामों के प्रभाव की जांच का अध्ययन
11. येलैया (2012)–हाईस्कूल के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर समायोजन का अध्ययन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एंड इंटरडिसिप्लिनरीरिसर्च खंड–1, संख्या–5, मई 2012।
12. रीचर्डसी. रोशिचर 1974 सोशियोमेट्रिक एक्सट्रैक्ट में गणितीय तरीकों की समीक्षा संचार और मूल्याकंन के समूह और संगठनात्मक संरचनाओं के विश्लेषण
13. राठौर,अनीता (2004) "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समन्वय व शैक्षिकउपलब्धि का विद्यार्थियों के समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन।
14. विशाल, पी. औरकाजी, एस.एम. (2014)–अहमदाबाद में लड़कों और लड़कियों के स्कूल स्तर के छात्रों का समायोजन। द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, खंड 2, अंक 1।
15. विश्वेश्वरी, वी. औररेड्डी, बी. वाई. (2014)–कुछ कारकों के संबंध में नौवीं कक्षा के छात्रों की समायोजन समस्याओं का अध्ययन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च (2014), खंड 2, अंक 1, पीपी–463–468।